P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-7* ISSUE-2* October- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

दलित चेतना : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

मानवेन्द्र प्रताप सिंह
एसोसिएट प्रोफेसर
विभाग समाजशास्त्र
दी0द0उ0 गोरखपुर विश्वविद्यालय,
गोरखपुर, उ.प्र., भारत

राकेश कुमार गुप्ता
प्रवक्ता
विभाग, समाजशास्त्र
बाबू बैजनाथ सिंह, कन्या
महाविद्यालय, देवढ़ी,
अण्डिला, देवरिया, उ.प्र., भारत

सारांश

स्वतंत्रोपरान्त विगत 6 दशकों के अन्तराल में अस्पृश्यता का समूल अन्त भले ही नहीं हुआ है किन्तु अस्पृश्यता की स्थिति में अत्यधिक परिवर्तन हुआ है जिसके आधार पर यह आशा की जा सकती है कि निकट भविष्य में हिन्दू समाज अपने इस कलंक को मिटा सकेगा। दलित समाज सामाजिक–सांस्कृतिक परिवेश के साथ सामंजस्य स्थापित करते हुए राजनैतिक चेतना एवं सक्रियता की दिशा में तीव्र गति से अग्रसर है। तमाम सरकारी प्रयासों के बाद भी दलित वर्ग को समाज की मुख्यधारा के साथ जोड़ने में गैर दलित को हिचकिचाहट होती है। यद्यपि राजनैतिक और आर्थिक दृष्टि से उनकी स्थिति में पिछले कुछ दशकों में तुलनात्मक रूप से काफी सुधार हुआ है तथापि आज भी उनकी सामाजिक प्रस्थिति को संतोषजनक नहीं कहा जा सकता। संविधान के द्वारा अनेक सुविधाओं के बावजूद उन पर नीची जाति अथवा दलित होने का जो एक सामाजिक कलंक है वह अभी नहीं मिटा है। स्वयं को हीन समझने का भाव स्वयं दलित वर्ग में आज भी विद्यमान है जब तक सामाजिक व्यवस्था के अन्तर्गत उन्हें समानता का दर्जा नहीं मिलता है तब तक दलितों की समस्या और उनका विकास भारतीय सामाजिक व्यवस्था के अन्तर्गत एक ज्वलन्त मुद्दा बना रहेगा। ग्रामीण अंचलों में ऐसे बहुत सारे दलित है जो राजनैतिक, सामाजिक और आर्थिक अधिकारों से वंचित है और न ही इन अधिकारों के प्रति उनमें जागरूकता है। अतः मूल समस्या स्वयं दलितों में अपने अधिकारों के प्रति चेतना जागृत करने की और अपने प्रस्थिति में सुधार करने की है।

मुख्य शब्द : अस्पृश्यता, राजनैतिक, परम्परात्मक, बहिष्कृत, समाजशास्त्रीय।

प्रस्तावना

अनुसूचित जातियाँ (एस0सी0) हरिजन अर्थात् ईश्वर की संतान के नाम से जानी जाती है। इस शब्द (टर्म) की रचना महात्मा गाँधी ने सन् 1933 में की थी। कुछ जातियों के नेताओं द्वारा हरिजन के नामकरण को निन्दात्मक रूप में देखा गया। ये लोग अपने आपको 'दलित' अर्थात् शोषित कहलाना पसन्द करते है (गुरु, 2001 a)। हिन्दू जाति व्यवस्था के क्रम में इनका स्थान सबसे नीचे होने के कारण ये लोग अवर्ण कहलाते है अर्थात् वे व्यक्ति जिनका स्थान 'चातुवर्ण्य व्यवस्था' से बाहर है। ये लोग देश के विभिन्न भागों में 'परिअल', 'पंचम', 'अतिशूद्र', 'अत्यंज' या नामशूद्र के नाम से जाने जाते है।

दलित शब्द से मोटे तौर पर आशय जनसंख्या के उस शोषित व पीड़ित वर्ग से है जो परम्परात्मक आधार पर सदियों से सामान्य सामाजिक, आर्थिक व राजनैतिक अधिकारों से वंचित रहा है (अइय्यर, 1976 : 31)

अम्बेडकर ने कहा है कि दलित वह है, जो वर्णवादी व्यवस्था के प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष दमन का शिकार हुआ था और हो रहा है जो सब जगह, सब समय अपने को दलित महसूस करते है, जिन्हें दलित होने का एहसास कराया जाता है, ऐसे अनुसूचित जाति, जनजाति वर्ग के लोग दलित कहलाते है। वस्तुतः दलित के लिये आर्थिक भेदभाव से ज्यादा सामाजिक भेदभाव परेशान करता है।

सामाजिक चिन्तकों ने समाज के ऐसे मनुष्यों के वर्ग के लिये 'दलित' शब्द का प्रयोग किया जिनकी सामाजिक, आर्थिक और मानसिक दशा अन्य की अपेक्षा बहुत नीचे थी। दलित वर्ग के अन्तर्गत वैसे वर्गों को सम्मिलित किया गया जिन्हें समाज ने बहिष्कृत कर अस्पृश्य बना दिया था। ऐसे लोग मानसिक रूप से इतने भयभीत थे कि वे अपने कष्टों के निवारण हेतु स्वयं प्रयासरत नहीं

थे। वे सामाजिक, आर्थिक तथा मानसिक दृष्टि से समाज के अन्य उन्नत वर्गों के रहमों करम पर अपना जीवन–यापन करने को मजबूर थे।

सामान्यतः समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से भारत में 'दलित' शब्द का प्रयोग 'सामाजिक वंचना' के शिकार अस्पृश्य समूहों के लिए किया जाता है। 'सामाजिक वंचना' शब्द का तात्पर्य समाज में विद्यमान वंचना के बहुआयामी स्वरूप से है। जिसमें राजनैतिक निर्णय प्रक्रिया में सहभागिता, भौतिक और रोजगारपरक संसाधनों तक पहुँच तथा साझी संस्कृति में सहभागिता से वंचना आदि प्रमुख है।

ओमन का मत है कि 'दलित चेतना' वह जटिल और सम्मिश्रित चेतना है जो भौतिक अस्तित्व की उन अमानवीय परिस्थितियों से उपजा है जो शक्तिहीनता और उच्च वर्गों के वैचारिक प्रभुत्व के कारण है।

प्रस्तुत अध्ययन का मुख्य उद्देश्य गोरखपुर जनपद में रहने वाले दलितों में सामाजिक और राजनैतिक चेतना का यथार्थ मापन करना है और इस सैद्धान्तिक अनुमान का सत्यापन करना है कि स्वतंत्रता प्राप्ति के लगभग 6 दशक उपरान्त सतत् शासकीय प्रयासों के फलस्वरूप उनकी समाजार्थिक और सांस्कृतिक स्थिति में निश्चित रूप से सुधार हुआ है।

प्रस्तुत अध्ययन का क्षेत्र गोरखपुर जनपद है। प्रस्तुत अध्ययन के उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए गोरखपुर जनपद के दो गाँव सहजनवाँ विकास खण्ड से रामपुर गड़थौली (अम्बेडकर ग्राम) और गोला विकास खण्ड से खोपापार (अम्बेडकर ग्राम) का चयन दैव निदर्शन की प्रणाली पर आधारित होकर किया गया है। चुने हुए गाँवों के सभी दलित परिवारों का अध्ययन जनगणना पद्धति द्वारा किया गया है। सूचना संकलन के लिए प्रत्येक परिवार से एक व्यक्ति को जिनकी उम्र 18 वर्ष या उससे अधिक है उत्तरदाता के रूप में चुना गया है। इस प्रकार प्रस्तुत अध्ययन में प्रतिदर्श का आकार 174 है जिसमें 86 (49.44%) चमार, 65 (37.35%) बेलदार और 23 (13.21%) धोबी सम्मिलित है। प्रस्तुत अध्ययन में दलित के अन्तर्गत केवल उन्हीं लोगों को रखा गया है जो राज्य द्वारा वर्णित सूची के अन्तर्गत आते हैं।

प्रस्तुत अध्ययन में मुख्य बल तथ्यात्मक मापन पर होने के कारण इसका शोध अभिकल्प वर्णनात्मक है तथा विषय से सम्बन्धित कुछ अज्ञात पक्षों को जानने की चेष्टा के कारण प्रयुक्त अभिकल्प की प्रवृत्ति गवेषणात्मक भी है। इस प्रकार व्यवहारिक धरातल पर प्रस्तुत शोध का अभिकल्प 'वर्णनात्मक एवं गवेषणात्मक' है। प्रस्तुत अध्ययन में अशिक्षित लोग भी सम्मिलित थे अतः प्राथमिक आंकड़ों के एकत्रीकरण के लिए साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग किया गया है।

संकलित तथ्यों के विश्लेषण से यह ज्ञात हुआ कि 25.29% सूचनादाताओं ने कहा कि दलित जातियों में समानता पाई जाती है जबकि 74.71% सूचनादाताओं ने कहा कि इनमें भी स्तरीकरण का क्रम पाया जाता है। तालिका–1 से स्पष्ट होता है कि चमार, बेलदार और धोबी जाति के सूचनादाताओं में शिक्षित हो या अशिक्षित उनकी शिक्षा का स्तर चाहे जो हो अधिसंख्यक सूचनादाताओं का मानना है कि दलितों में जातिगत आधार पर स्तरीकरण पाया जाता है यथा – बेलदार, धोबी, चमार। अतः कहा जा सकता है कि दलितों में ऊँच–नीच की भावना पाई जाती है।

'वसुधैव कुटुम्बकम्', 'ईश्वर सर्वभूतानाम्', 'सर्वे भवन्तु सुखिनः', 'स्वदेशो भवनत्रयम्' एवं 'अतिथि देवो भवः' जैसे उच्चादर्शों का उद्घोष करने वाले हिन्दू धर्म के लिए अस्पृश्यता जैसी हेय एवं कुत्सित प्रथा निश्चित रूप से एक कलंक है। इसके सन्दर्भ में पूछे जाने पर कि क्या उच्च जाति के लोग अपनी पंक्ति में भोजन कराते है। इस सम्बन्ध में प्रतिदर्श में सम्मिलित 18.97% सूचनादाताओं ने कहा कि अपनी पंक्ति में भोजन कराते है और 81.03% ने कहा कि नहीं कराते है। तालिका–2 से स्पष्ट है कि चमार, बेलदार और धोबी जाति के सूचनादाताओं में जिनकी आय कम है उनकी तुलना में अधिसंख्यक अधिक आय वाले सूचनादाताओं को उच्च जाति के लोग अपनी पंक्ति में भोजन कराते है। अतः कहा जा सकता है कि शासन द्वारा किए गये लगभग 6 दशकों के सतत् प्रयासों से अनुसूचित जातियों की समाजार्थिक स्थिति और साथ ही उनके प्रति सवर्णों के व्यवहार अर्थात् छुआछूत की धारणा निश्चिततः प्रभावित हुई है।

प्रतिदर्श में सम्मिलित 98.28% सूचनादाता चुनाव में वोट डालने जाते है और 1.72% सूचनादाता नहीं जाते है। तालिका–3 से स्पष्ट है कि चमार और बेलदार जाति के सूचनादाताओं में पुरुषों की तुलना में अधिसंख्यक महिलायें वोट डालने जाती है। धोबी जाति के 100% महिला और पुरुष सूचनादाता वोट डालने जाते है। दलित पुरुषों की तुलना में अधिसंख्यक दलित महिलायें वोट डालने जाती है। अतः कहा जा सकता है कि पुरुषों की तुलना में महिलाओं में राजनीतिक सक्रियता अधिक पाई जाती है और वे मतदान के अधिकार के प्रति अधिक जागरूक है।

प्रतिदर्श में सम्मिलित 23% सूचनादाता प्रत्याशी के वैयक्तिक गुण, 60.34% राजनीतिक दल और 16.66% सूचनादाता जाति के आधार पर वोट देते है। तालिका–4 से स्पष्ट है कि दलितों में अशिक्षित सूचनादाताओं की तुलना में अधिसंख्यक उच्च शिक्षा प्राप्त सूचनादाता प्रत्याशी

के वैयक्तिक गुणों के आधार पर अपने मत का प्रयोग करते है। उच्च शिक्षा प्राप्त दलित सूचनादाताओं की तुलना में अधिसंख्यक अशिक्षित सूचनादाता राजनीतिक दल के आधार पर अपने मत का प्रयोग करते है। चमार और बेलदार जाति के कुछ अशिक्षित सूचनादाता जाति के आधार पर अपने मत का प्रयोग करते है, वहीं इसी वर्ग के उच्च शिक्षा प्राप्त सूचनादाता जातिगत आधार पर अपने मत का प्रयोग नहीं करते है। अतः कहा जा सकता है कि दलितों ने मतदान के परम्परागत आधार जाति के स्थान पर प्रत्याशी के वैयक्तिक गुण एवं राजनीतिक दल जैसे प्रगतिशील एवं आधुनिक आधारों को महत्व देकर अपने आधुनिक विचारों को उज्जाग्रत किया है।

आप चुनाव के समय क्या सहयेाग करते है ? इस सम्बन्ध में 90.48% सूचनादाता प्रचार करते है और 9.25% सूचनादाता वोट के लिए लोगों को जागरूक करते है। तालिका–5 से स्पष्ट है कि अधिसंख्यक सूचनादाता चाहे वे किसी भी जाति के हो और उनकी शिक्षा का स्तर चाहे जो हो प्रचार करने का कार्य करते है। बेलदार जाति में उच्च शिक्षा प्राप्त 50% सूचनादाता वोट के लिए लोगों को जागरूक करते है, चमार जाति में अशिक्षित, माध्यमिक और हाईस्कूल स्तर के कुछ सूचनादाता लोगों को वोट के लिए जागरूक करने का कार्य करते है।

दलितों के राजनीतिक हित के लिए किसकी सरकार होनी चाहिए। इस सम्बन्ध में 83.90% सूचनादाताओं ने कहा कि स्वयं दलितों की और 16.10% सूचनादाताओं ने कहा कि किसी की भी सरकार हो। तालिका–6 से स्पष्ट है कि चमार और बेलदार जाति के उच्च शिक्षा प्राप्त सूचनादाताओं की तुलना में अधिसंख्यक अशिक्षित सूचनादाता दलितों के सरकार के पक्ष में है। धोबी जाति में 100% अशिक्षित सूचनादाता दलितों के सरकार के पक्ष में है, वहीं उच्च शिक्षा प्राप्त 100% सूचनादाता इसके पक्ष में नहीं है। अतः कहा जा सकता है कि आज का दलित यह महसूस करता है कि उनके राजनीतिक हितों की रक्षा तभी सम्भव है जब उनकी सरकार हो।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद दलित जातियों की स्थिति में क्या सुधार हुआ ? इस सम्बन्ध में 88.50% सूचनादाताओं ने कहा कि दलित जातियाँ ऊपर उठी है और 2.58% ने कहा कि उच्च जातियों के समान अधिकार मिला है और 10.92% सूचनादाताओं ने कहा कि कोई सुधार नहीं हुआ है तालिका–7 से स्पष्ट है कि चमार,. बेलदार और धोबी जाति के सूचनादाताओं में अशिक्षित सूचनादाताओं की तुलना में अधिसंख्यक उच्च शिक्षा प्राप्त सूचनादाताओं का मानना है कि दलित जातियों की स्थिति में सुधार हुआ है। अतः कहा जा सकता है कि दलित जातियाँ पहले से बेहतर स्थिति में पहुँच गयी है।

आपके विचार से दलित जाति को राष्ट्र की मुख्यधारा से जोड़ने के लिए सरकार को क्या करना चाहिए ? इस सम्बन्ध में 74.13% सूचनादाताओं ने कहा कि नये व्यवसाय में लगायें, 14.37% ने कहा अस्पृश्यता की समाप्ति और 11.50 ने कहा कि आर्थिक सहायता दी जाये। तालिका–8 से स्पष्ट है कि चमार जाति के सूचनादाताओं में उच्च शिक्षा प्राप्त लोगों की तुलना में अधिसंख्यक अशिक्षित सूचनादाताओं का कहना है कि नये व्यवसाय में लगाया जाये। वहीं इसी जाति में अशिक्षित सूचनादाताओं की तुलना में अधिसंख्यक उच्च शिक्षा प्राप्त लोग अस्पृश्यता की समाप्ति के पक्ष में है। बेलदार जाति के सूचनादाताओं में उच्च शिक्षा प्राप्त लोगों की तुलना में अधिसंख्यक अशिक्षित लोगों का कहना है कि नये व्यवसाय में लगाया जाये। इसी जाति में अशिक्षितों की तुलना में उच्च शिक्षा प्राप्त लोग अस्पृश्यता की समाप्ति के पक्ष में है। धोबी जाति के अधिसंख्यक सूचनादाता नये व्यवसाय के पक्ष में है। चमार, बेलदार और धोबी जाति के सूचनातदाओं में अशिक्षित लोगों की तुलना में अधिसंख्यक उच्च शिक्षा प्राप्त लोग आर्थिक सहायता की माँग कर रहे है। अतः कहा जा सकता है कि अधिकांश दलित सूचनादाता आरक्षित व्यवसायों को छोड़कर अनारक्षित पद को प्राप्त करना चाहते है जो उनकी कर्मठता, दृढ़ इच्छा शक्ति और आत्मसम्मान की भावना को उजागर करती है।

संदर्भ

1. Briggs, G.W.(1920), The Chamars, London: Oxford University Press.
2. Dumont, Louis 1970, Home-Heritage: The Caste System and its Implications Chicago. Chicago University Press.
3. Ghurye, G.S. 1950 : Caste and class in India, Bombay : Popular Book Depot.
4. Kane, P.V. 1930 : A History of the Dharmasastras : Ancient and Mediaeval Religious and Civil Low, 3 Vols. Bhandarkar Oriental Research Institute, Poona, India.
5. Omvedt, Gail, 1994: Dalit and the Democratic Revolution : Dr. Ambedkar and the Dalit Movement in Colonail India New Delhi, Sage Publications.
6. Pal, Sudha 2002: Dalit Assertiond the Unfinished Democratic Revolution The BSP in Uttar Pradesh, New Delhi, Sage Publications.
7. Rao, M.S.A.(ed)1984: Social movements in India. New Delhi, Monohar Publications.
8. Shah, Ghanshyam 1990 Social Movements in India: A review of the Literature, New Delhi. Sage Publications.
9. Sharma, K.L. (ed)1998 Caste and class in India : Jaipur, Rawat Publications.

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-7* ISSUE-2* October- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

तालिका 1
आपके गाँव में जो दलित जातियाँ है वे एक बराबर है या इनमें भी उच्चता निम्नता पाई जाती है
(जाति एवं शिक्षा के आधार पर)

4.1																			
जाति	f %	शिक्षा का स्तर																	
		अशिक्षित			माध्यमिक			हाई स्कूल			इण्टर			उच्च शिक्षा			कुल योग		
		f %	f %	f %	f %	f %	f %	f %	f %	f %	f %	f %	f %	f %	f %	f %	f %	f %	f %
		बराबर	उच्चता निम्नता	योग	बराबर	उच्चता निम्नता	योग	बराबर	उच्चता निम्नता	योग	बराबर	उच्चता निम्नता	योग	बराबर	उच्चता निम्नता	योग	बराबर	उच्चता निम्नता	योग
चमार	86	7	17	24	7	27	34	2	8	10	3	6	9	3	6	9	22	64	86
	49.44	29.16	70.84	27.90	20.59	79.41	39.53	20	80	11.63	33.33	66.67	10.47	33.33	66.67	10.47	25.59	74.41	49.44
बेलदार	65	5	5	10	4	31	35	5	3	8	1	2	3	4	5	9	19	46	65
	37.35	50	50	15.39	11.42	88.58	53.84	62.5	37.5	12.30	33.33	66.67	4.62	44.44	55.56	13.85	29.23	70.77	37.35
धोबी	23	1	2	3	1	14	15	1	1	2	-	1	1	-	2	2	3	20	23
	13.21	33.33	66.67	13.04	6.67	93.33	65.22	50	50	8.70	-	100	4.34	-	100	8.70	13.05	86.95	13.21
योग	174	13	24	37	12	72	84	8	12	20	4	9	13	7	13	20	44	130	174
	100	35.13	64.87	21.26	14.29	85.71	48.27	40	60	11.50	30.76	69.24	7.47	35	65	11.50	25.29	74.71	100

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-7* ISSUE-2* October- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

तालिका 2
क्या उच्च जाति के लोग अपनी पंक्ति में भोजन कराते है?
(जाति और आय के आधार पर)

जाति	f %	आय (हजार में)														
		0 . 3000			3001– 6000			6001 – 9000			9000 से ऊपर			कुल योग		
		f %	f %	f %	f %	f %	f %	f %	f %	f %	f %	f %	f %	f %	f %	f %
		हाँ	नहीं	योग	हाँ	नहीं	योग	हाँ	नहीं	योग	हाँ	नहीं	योग	हाँ	नहीं	योग
चमार	86	19	55	74	2	5	7	-	1	1	1	3	22	22	64	86
	49.44	25.78	74.32	86.05	28.58	71.42	8.13	-	100	1.17	25	75	25.29	25.59	74.41	49.44
बेलदार	65	16	40	56	3	4	7	-	2	2	-	-	19	19	46	65
	37.35	28.58	71.42	86.15	42.85	57.15	10.77	-	100	3.08	-	-	29.23	29.23	70.77	37.35
धोबी	23	3	14	17	-	3	3	-	1	1	-	2	3	3	20	23
	13.21	17.65	82.35	73.91	-	100	13.05	-	100	4.34	-	100	13.05	13.05	86.95	13.21
योग	174	38	109	147	5	12	17	-	4	4	1	5	44	44	130	174
	100	25.85	74.15	84.49	29.41	70.59	9.77	-	100	2.30	16.66	83.34	25.29	25.29	74.71	100

तालिका 3
क्या आप चुनाव में वोट डालने जाते है?
(जाति और लिंग के आधार पर)

जाति	f %	लिंग								
		स्त्री			पुरूष			कुल योग		
		f %	f %	f %	f %	f %	f %	f %	f %	f %
		हाँ	नहीं	योग	हाँ	नहीं	योग	हाँ	नहीं	योग
चमार	86	16	-	16	65	5	70	81	5	86
	49.44	100	-	18.60	92.85	7.15	81.40	94.19	5.81	49.44
बेलदार	65	9	1	10	52	3	55	61	4	65
	37.35	90	10	15.39	94.55	5.45	84.61	93.85	6.15	37.35
धोबी	23	2	-	2	21	-	21	23	-	23
	13.21	100	-	8.7	100	-	91.30	100	-	13.21
योग	174	27	1	28	138	8	146	165	9	174
	100	96.42	3.58	16.09	94.52	5.48	83.91	94.82	5.18	100.00

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-7* ISSUE-2* October- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

तालिका 4
आप चुनाव में अपने मत का प्रयोग किस आधार पर करते है?
(जाति एवं शिक्षा के स्तर के आधार पर)

जाति	f %	शिक्षा का स्तर																							
		अशिक्षित				माध्यमिक				हाई स्कूल				इण्टर					उच्च शिक्षा			कुल योग			
		f %	f %	f %	f %	f %	f %	f %	f %	f %	f %	f %	f %	f %	f %	f %	f %	f %	f %	f %	f %	f %	f %	f %	f %
		प्रत्याशी के वैयक्तिक गुण	राजनीतिक दल	जाति	योग	प्रत्याशी के वैयक्तिक गुण	राजनीतिक दल	जाति	योग	प्रत्याशी के	राजनीतिक दल	जाति	योग	प्रत्याशी के वैयक्तिक गुण	राजनीतिक दल	जाति	योग	प्रत्याशी के वैयक्तिक गुण	राजनीतिक दल	जाति	योग	प्रत्याशी के वैयक्तिक गुण	राजनीतिक दल	जाति	योग
चमार	86	-	15	9	24	1	24	9	34	3	3	4	10	4	3	2	9	5	4	-	9	13	49	24	86
	49.44	-	62.5	37.5	27.90	2.94	70.59	26.47	39.53	30	30	40.00	11.63	44.44	33.33	22.23	10.47	55.56	44.44	-	10.47	15.11	56.99	27.90	49.44
लदार	65	2	7	1	10	3	31	1	35	4	2	2	8	1	1	1	3	7	2	-	9	17	43	5	65
	37.35	20	70	10	15.39	8.58	88.57	2.85	53.84	50	25	25.00	12.30	33.33	33.33	33.34	4.62	77.78	22.22	-	13.85	26.15	66.15	7.70	37.35
धोबी	23	-	3	-	3	7	8	-	15	-	2	-	2	1	-	-	1	2	-	-	2		13	-	23
	13.21	-	100	-	13.04	46.67	53.33	-	65.22	-	100	-	8.70	100	-	-	4.34	100	-	-	8.70	43.48	56.52	-	13.21
योग	174	2	25	10	37	11	63	10	84	7	7	6	20	6	4	3	13	14	6	-	20	40	105	29	174
	100	5.40	67.58	27.02	21.26	13.10	75.00	11.90	48.27	35	35	30.00	11.50	46.15	30.77	23.08	7.47	70.00	30.00	-	11.50	23.00	60.34	16.66	100

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-7* ISSUE-2* October- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

तालिका 5
आप चुनाव के समय क्या सहयोग करते है?
(जाति एवं शिक्षा के स्तर के आधार पर)

जाति	f %	शिक्षा का स्तर																	
		अशिक्षित			माध्यमिक			हाई स्कूल			इण्टर			उच्च शिक्षा			कुल योग		
		f %	f %	f %	f %	f %	f %	f %	f %	f %	f %	f %	f %	f %	f %	f %	f %	f %	f %
		प्रचार करते है।	वोट के लिए लोगों को जागरूक करना	योग	प्रचार करते है।	वोट के लिए लोगों को जागरूक करना	योग	प्रचार करते है।	वोट के लिए लोगों को जागरूक करना	योग	प्रचार करते है।	वोट के लिए लोगों को जागरूक करना	योग	प्रचार करते है।	वोट के लिए लोगों को जागरूक करना	योग	प्रचार करते है।	वोट के लिए लोगों को जागरूक करना	योग
चमार	36	8	1	9	15	3	18	3	1	4	3	-	3	2	-	2	31	5	36
	57.15	88.89	11.11	25	83.34	16.66	50.00	75.00	25.00	11.11	100.00	-	8.34	100	-	5.55	86.11	13.89	57.15
बेलदार	21	1	-	1	14	-	14	4	-	4	-	-	-	1	1	2	20	1	21
	33.33	100	-	4.77	100.00	-	66.67	100.00	-	19.04	-	-	-	50.00	50.00	9.52	95.23	4.77	33.33
धोबी	6	-	-	-	6	-	6	-	-	-	-	-	-	-	-	-	6	-	6
	9.52		-		100		100										100	-	9.52
योग	63	9	1	10	35	3	38	7	1	8	3		3	3	1	4	57	6	63
	100	90	10	15.88	92.10	7.90	60.31	87.5	12.5	12.70	100.00		4.77	75.00	25.00	6.34	90.48	9.52	100

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-7* ISSUE-2* October- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

तालिका 6
आपके विचार से दलितों के राजनीतिक हित के लिए किसकी सरकार होनी चाहिए?
(जाति एवं शिक्षा के स्तर के आधार पर)

जाति	f %	शिक्षा का स्तर																	
		अशिक्षित			माध्यमिक			हाई स्कूल			इण्टर			उच्च शिक्षा			कुल योग		
		f %	f %	f %	f %	f %	f %	f %	f %	f %	f %	f %	f %	f %	f %	f %	f %	f %	f %
		स्वयं दलितों की	किसी की भी	योग	स्वयं दलितों की	किसी की भी	योग	स्वयं दलितों की	किसी की भी	योग	स्वयं दलितों की	किसी की भी	योग	स्वयं दलितों की	किसी की भी	योग	स्वयं दलितों की	किसी की भी	योग
चमार	86	23	1	24	32	2	34	9	1	10	6	3	9	7	2	9	77	9	86
	49.44	95.83	4.17	27.90	94.11	5.89	39.53	90.00	10.00	11.63	66.67	33.33	10.47	78	22.22	10.47	84.53	10.47	49.44
बेलदार	65	7	3	10	33	2	35	6	2	8	1	2	3	4	5	9	51	14	65
	37.35	70	30	15.4	94.29	5.71	53.84	75.00	25.00	12.30	33.33	66.67	4.62	414.44	55.56	13.85	78.47	21.53	37.35
धोबी	23	3	-	3	13	2	15	2	-	2	-	1	1	-	2	2	18	5	23
	13.21	100	-	13	86.67	13.33	65.22	100	-	8.70	-	100	4.34	-	100	8.7	78.27	21.73	13.21
योग	174	33	4	37	78	6	84	17	3	20	7	6	13	11	9	20	146	28	174
	100	89.19	10.18	21.26	92.85	7.15	48.27	85.00	15.00	11.50	53.85	46.15	7.47	55.00	45.00	11.50	83.90	16.10	100

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-7* ISSUE-2* October- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

तालिका 7
स्वतंत्रता के बाद दलित जातियों की स्थिति में क्या सुधार हुआ?
(जाति एवं शिक्षा के स्तर के आधार पर)

जाति	f %	शिक्षा का स्तर																							
		अशिक्षित				माध्यमिक				हाई स्कूल				इण्टर				उच्च शिक्षा				कुल योग			
		f %	f %	f %	f %	f %	f %	f %	f %	f %	f %	f %	f %	f %	f %	f %	f %	f %	f %	f %	f %	f %	f %	f %	f %
		दलित जातियाँ ऊपर उठी है	उच्च जातियों के समान अधिकार	कोई सुधार नहीं	योग	दलित जातियाँ ऊपर उठी है	उच्च जातियों के समान अधिकार	कोई सुधार नहीं	योग	दलित जातियाँ ऊपर उठी है	उच्च जातियों के समान अधिकार	कोई सुधार नहीं	योग	दलित जातियाँ ऊपर उठी है	उच्च जातियों के समान अधिकार	कोई सुधार नहीं	योग	दलित जातियाँ ऊपर उठी है	उच्च जातियों के समान अधिकार	कोई सुधार नहीं	योग	दलित जातियाँ ऊपर उठी है	उच्च जातियों के समान अधिकार	कोई सुधार नहीं	योग
चमार	86	18	-	6	24	29	2.94	4	34	9	-	1	10	6	-	3	9	9	-	-	9	71	1	14	86
	49.44	75	-	25	27.9	85.30	-	11.76	39.53	90	-	10	11.63	66.67	-	33.33	10.47	100	-	-	10.47	82.55	1.17	16.28	49.44
बेलदार	65	10	-	-	10	33	-	2	35	8	-	-	8	3	-	-	3	9	-	-	9	63	-	2	65
	37.35	100	-	-	15.39	94.29	-	5.71	53.84	100	-	-	12.30	100	-	-	4.62	100	-	-	13.85	96.92	-	3.08	37.35
धोबी	23	1	-	2	3	14	-	1	15	2	-	-	2	1	-	-	1	2	-	-	2	20	-	3	23
	13.21	33.33	-	66.67	13.04	94.29	-	6.67	65.22	100	-	-	8.7	100	-	-	4.34	100	-	-	8.70	86.95	-	13.05	13.21
योग	174	29	-	8	37	76	1	7	84	19	-	1	20	10	-	3	13	20	-	-	20	154	1	19	174
	100	78.38	-	21.62	21.26	90.47	1.20	8.33	48.27	95	-	5	11.50	76.92	-	23.08	7.47	100	-	-	11.50	88.50	2.58	10.92	100

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-7* ISSUE-2* October- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

तालिका 8
आपके विचार से दलित जाति को राष्ट्र की
मुख्य धारा से जोड़ने के लिए सरकार को क्या
करना चाहिए (जाति एवं शिक्षा के स्तर के आधार पर)

जाति	f %	शिक्षा का स्तर																							
		अशिक्षित				माध्यमिक				हाई स्कूल				इण्टर				उच्च शिक्षा				कुल योग			
		f %	f %	f %	f %	f %	f %	f %	f %	f %	f %	f %	f %	f %	f %	f %	f %	f %	f %	f %	f %	f %	f %	f %	f %
		नये व्यवसाय में लगाये	अस्पृश्यता की समाप्ति	आर्थिक सहायता	योग	नये व्यवसाय में लगाये	अस्पृश्यता की समाप्ति	आर्थिक सहायता	योग	नये व्यवसाय में लगाये	अस्पृश्यता की समाप्ति	आर्थिक सहायता	योग	नये व्यवसाय में लगाये	अस्पृश्यता की समाप्ति	आर्थिक सहायता	योग	नये व्यवसाय में लगाये	अस्पृश्यता की समाप्ति	आर्थिक सहायता	योग	नये व्यवसाय में लगाये	अस्पृश्यता की समाप्ति	आर्थिक सहायता	योग
चमार	86	18	3	3	24	27	2	5	34	8	1	1	10	2	5	2	9	4	2	3	9	59	13	14	86
	49.44	75	12.5	12.5	27.9	79.4	5.89	14.70	39.53	80	10	10	11.63	22.22	55.56	22.22	10.47	44.44	22.22	33.34	10.47	68.60	15.12	16.28	49.44
बेलदार	65	10	-	-	10	32	3	-	35	4	4	-	8	1	1	1	3	3	4	2	9	50	12	3	65
	37.4	100	-	-	15.4	91.4	8.58	-	53.84	50	50	-	12.30	33.33	33.33	33.34	4.62	33.34	44.44	22.22	13.85	76.92	18.47	4.61	37.4
धोबी	23	3	-	-	3	13	-	2	15	2	-	-	2	1	-	-	1	1	-	1	2	20	-	3	23
	13.2	100	-	-	13	86.7	-	13.3	65.2	100	-	-	8.7	100	-	-	4.34	50	-	50	8.70	87	-	13.1	13.2
योग	174	31	3	3	37	72	5	7	84	14	5	1	20	4	6	3	13	8	6	6	20	12.9	25	20	174
	100	83.80	8.10	8.10	21.26	85.71	5.95	8.34	48.27	70	25	5	11.50	30.77	46.15	23.08	7.47	40	30	30	11.50	74.13	14.37	11.50	100